International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 151-152

शिक्षकों की गुणात्मक शिक्षा के अभिवर्धन में मूल्यों की भूमिका

वंदना रानी
सहायक प्रवक्ता, हकीम हरबंस सिंह न्यू इरा कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन, संतनगर, सिरसा, हरियाणा, भारत।

सारांश
मूल्य का अर्थ आदर्श और पुरुषार्थ से है जिसमें मानव जीवन का सम्पूर्ण विकास हो सके। मूल्यों का संबंध दार्शनिक, सामाजिक और व्यक्तित्व से होता है तथा शिक्षा का अर्थ विद्या ज्ञान का अर्जन और हस्तांरण, प्रशिक्षण। शिक्षा ऐसी हो जिसमें विनम्रता व विनयशीलता का समावेश हो, धर्मानुकूल, न्याय–सम्वत तथा सत्ययुक्त जीवनयापन करने की प्रेरणा दें। आचरण में ही 'आचार्य' शब्द आता है। इसलिए शिक्षक, प्रशिक्षण एवं शिक्षकों के पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का समावेश अनिवार्य है। शिक्षक जिसे राष्ट्र का निर्माण करना होता है, की भूमिका महत्त्वपूर्ण और जटिल गतिविधि है। अध्यापक शिक्षा की मात्रात्मकता के साथ गुणवत्ता की चर्चा आज की आवश्यकता है। वैश्वीकरण ने शिक्षा में आतिशय उपभोक्तावाद, व्यवसायवाद तथा सांस्कृतिक अध्यारोपण की नई समस्या प्रस्तुत कर दी है। आज के तकनीकी युग में कक्षाओं के छात्रों में विभिन्न संस्कृतियों के तालमेल, तरह–तरह के विज्ञापनों से उपजी नकारात्मकता, पश्चिमी सभ्यता एवं पश्चिमी जीवनशैली को अपनाने की बढ़ती प्रवृत्ति आदि अनेक कारणों से उनकी मूल्य प्रणाली में भारी बदलाव ला दिया है। इसलिए आज की कक्षाओं में प्रभावकारी अध्यापन हेतु शिक्षकों के सेवापर्व व सेवाकालीन प्रशिक्षणों की विषयवस्तु व स्वरूप में दोनों को सुमन्नत बनाकर उन्हें प्रशिक्षित करना होगा। आज के शिक्षक को विद्यार्थियों को इस योग्य बनाने की आवश्यकता है कि वे विभिन्न संस्कृतियों को समझना, परखना सीखें, वास्तविकता व अफवाहों को समझें और उनमें से अपनाने लायक गुणों को ही ग्रहण करें। यह तभी योग्य होगा जब आज का शिक्षक स्वयं को सशक्त करें। शिक्षक समाज में चरित्र एवं मूल्यों की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। यह सर्वविदित तथ्य है कि बालक भावी राष्ट्र के कर्णधार हैं। अतः उन्हें नैतिक गुणों से युक्त होना चाहिए किन्तु जब तक उन्हें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा नहीं दी जायेगी तब तक गुणात्मकता का विकास नहीं हो पायेगा। अतः सर्वप्रथम हमें शिक्षक के गुणों में अभिवर्धन करना होगा, जिसमें भावी पीढ़ी को पूर्ण कर्मठता के साथ आगे आना होगा और पूर्ण उपेक्षाओं को शीघ्र दूर करने के लिए कमर कसनी होगी।

मूलशब्द : दार्शनिक, सामाजिक और व्यक्तित्व, विद्या ज्ञान, विद्यार्थियों।

प्रस्तावना
हमारे देश का विकास मुख्य रूप से अध्यापक के गुणों पर निर्भर करता है। इसी कारण शिक्षण कार्य को सभी कार्यों में से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। हमारे देश में अध्यापक शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ बनाये रखने हेतु मूल्यों के आधार पर अध्यापक शिक्षा के गुणों को अभिवर्द्धन करने की बहुत आवश्यकता है। इसलिए शिक्षा आयोग ने संस्तुतिकरण किया है :

> The introduction of "a sound programme of professional education to teachers."

इस गतिशील संसार की चुनौतियों का सामना करते हुए अध्यापक के सशक्तीकरण और व्यावसायिकरण के लिए अध्यापकों की तैयारी की प्रक्रिया की पुर्नेरचना करना बहुत आवश्यक है। शिक्षकों को स्थानीय राष्ट्रीय एवं वैश्वीय मांगों की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि शिक्षा के गुण बहुत ज्यादा अध्यापकों के गुणों पर निर्भर करते हैं। अध्यापक हमारी शिक्षा प्रणाली का मुख्य स्तम्भ है जो अधिगमकर्ता और समाज का विकास करता है। एक शिक्षक राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा, विकास के मुख्य व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों के गुणों का अभिवर्द्धन मूल्यों के माध्यम से विकसित किया जाए।

शिक्षकों के शैक्षणिक गुणों के अभिवर्द्धन में मूल्यों की भूमिका
मनुष्य जीवन कभी स्थिर नहीं होता, सदैव गतिशील रहता है, सदैव जीवंत और समृद्ध होता है। जब हम समझते हैं कि हमने नदी के एक हिस्से को समझ लिया है और उस हिस्से को कसकर पकड़कर रखते हैं तो वह सड़ा हुआ पानी होता है क्योंकि नदी तो प्रवाह में रहती है। नदी की सारी गतिविधियों को उनसे सीधे संपर्क में होना, यही जीवन है और इसके लिए हम सभी को तैयार होना है। ऐसे में शिक्षक और शिक्षा का यह दायित्व है कि वह विद्यार्थियों का स्वतंत्रतापूर्वक विकास करें ताकि वे संवदेनशून्य और जड़वृद्धि होकर अंधेरे में न खो जाएं और विद्यार्थी अपने जीवन की कठोर यथार्थपरक और जटिल समस्याओं का सामना कर लें। वास्तविक शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों की शिक्षा अध्यापक शिक्षा के चरित्र को भी समझना, बदलना पड़ेगा। मूल्यों के माध्यम से शिक्षकों को ऐसी शिक्षा प्रदान करनी होगी जिससे उनके गुणों का विकास हो सके। इसके लिए अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त वैचारिक जड़ता को भी दूर करना होगा। इस वैचारिक जड़ता को दूर करने में मूल्यों का बहुत महत्त्व है। मूल्य किसी भी वस्तु या क्रिया की वह विशेषता है जो हमारे जीवन की सुरक्षा एवं वृद्धि में सहायक होती है। अतः जो चीज किसी व्यक्ति के लिए उपयोगी होती है वही उसके लिए मूल्यवान बन जाती है। मूल्यों से शैक्षणिक गुणों के अभिवर्द्धन में निम्नलिखित प्रकार से हो सकते हैं :

1. **रोजी कमाने और भौतिक उन्नति की क्षमता :** आज जब हम शिक्षण तथा अध्यापकीय शिक्षण दोनों को ही आजीविका के रूप में मान्यता प्रदान कर चुके हैं तो ऐसी स्थिति में यह जरूरी हो जाता है कि अवश्य ही शैक्षिक प्रशासन और संगठनगत कौशलों

में भी कुशलता की प्राप्ति कर सके। प्रशासन को विभिन्न व्यक्ति तथा समूहों की क्रियाओं के मध्य समन्वयन करने का प्रयास करना होता है। प्रशासन में नियोजन, पर्यवेक्षण, व्यवस्था संचालन, नियंत्रण और निर्देश आदि कई तत्त्व शामिल होने के कारण यह एक व्यापक दायित्व हो जाता है जिसे मात्र शिक्षण अभ्यास जो अल्पकालीन और मात्र कक्षाकक्ष शिक्षण से ही मूलतः संबंधित हो, के माध्यम से व्यावहारिक तौर पर सीख पाना शायद ही संभव हो पाता है। यही कारण है कि व्यापक विद्यालययी के व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव आज सर्वत्र ही किया जा रहा है।

2. **व्यावसायिक कुशलता का विकास :** अध्यापक के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि उसकी शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाये। इस बारे में शिक्षाविदों क राय है कि शिक्षक शिक्षण कला में निपुण, कार्यकुशल, अच्छा ज्ञान एवं नवीन दृष्टिकोण रखने वाला हो। शिक्षक को कार्यकुशल बनाने के लिए दक्षता आधारित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने का प्रावधान किया जाना चाहिए। दक्षता का अभिप्राय व्यावसायिक योग्यता जिसमें अर्जित ज्ञान एवं उच्च स्तर की अवधारणा प्रस्तुत करने की योग्यता शामिल है। दक्षता प्रशिक्षण इसलिए दिया जाता है कि शिक्षक सक्षमता में वृद्धि की जा सके।
3. **स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व का विकास :** मूल्यों के द्वारा शिक्षकों का सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास होता है। सर्वांगीण विकास का अर्थ है – बुद्धि, हृदय तथा हाथों का विकास। शिक्षक के शैक्षणिक गुणों की वृद्धि के लिए इन सभी का उचित एवं संतुलित सहयोग आवश्यक होता है।
4. **अनुभव का पुनर्गठन एवं पुनः निर्माण :** मूल्य शिक्षा शिक्षक के अंदर मूल्यों के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। मूल्य शिक्षक को आन्तरिक रूप से इतना शक्तिशाली बना देती है कि वे मन, वचन, कर्म से लालच, स्वार्थ की भावना का त्याग करने में समर्थ हो जाते हैं।
5. **अच्छी नागरिकता का विकास :** मूल्य की शिक्षा शिक्षक में अच्छी नागरिकता का विकास करती है। शिक्षक के व्यक्तित्व को निखारती है। आंतरिक सशक्तिकरण कर इच्छाओं को कम करके उपभोक्तावाद की आँधी को समाप्त करती है। परिणामस्वरूप मूल्यनिष्ठ जीवनशैली की सरलता के कारण वह अनुचित एवं बेईमानी से अपने आप के स्त्रोतों को बढ़ाने का प्रलोभन भी अपने मन में नहीं लाता।
6. **पर्यावरण के साथ अनुकूलन :** मूल्य शिक्षा शिक्षक को इतना जागरूक एवं कुशल बना देती है कि वे गलत कार्यों में संलग्न होने के किसी भी दबाव का मुकाबला कर सकते हैं। मूल्यों को जीवन में धारण करने से सामाजिक व्यवस्था में प्रविष्ट कुप्रवृत्तियों, भ्रष्टाचार, घूसखोरी जैसी बुराईयों, महिलाओं, बच्चों, पिछड़ी जाति के लोगों के साथ होने वाले भेदभावों को समाप्त करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। ऐसे में शिक्षक अपनी प्रतिष्ठा तथा स्वमान की रक्षा कर सकेंगे।
7. **चरित्र का विकास :** शिक्षक के चरित्र निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना जाता है अतः शिक्षक का समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र–निर्माण होना चाहिए। चरित्र निर्माण में साहस, विश्वास की शक्ति, सच्चाई, शुद्धता, मानव सेवा आदि नैतिक गुणों का विकास सम्मिलित है। शिक्षा चरित्र के बिना और चरित्र पवित्रता के बिना व्यर्थ है।
8. **सामाजिक कुशलता का विकास :** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह समाज ही है जो उसे सभ्य बनाता है। समाज में ही उसकी आत्मचेतना जागती है और वह अपने को 'मानव' समझने लगता है। वह परहित में रूचि लेने लगता है। परहित का अर्थ है दूसरों की भलाई के लिए अपने व्यक्तिगत हितों का बलिदान कर देना। कुछ सामाजिक मूल्य जैसे – अनुशासन, परोपकार, सहनशीलता, सामाजिक न्याय आदि शिक्षकों के शैक्षणिक गुणों में वृद्धि करते हैं।
9. **राष्ट्रीय एकता एवं विकास :** शिक्षा राष्ट्रीय विकास का बीज एवं फूल है। शिक्षा और नियोजन के क्षेत्रों में किये गये प्रयत्न राष्ट्रीय विकास में फलीभूत होते हैं। राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान को जितनी बातें प्रभावित करती हैं उनमें शिक्षकों के गुण, उनकी क्षमता तथा उनका चरित्र सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

मूल्य शिक्षकों के जीवन और उनके शैक्षणिक गुणों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन्हीं के द्वारा व्यक्ति अपना व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन सफलतापूर्वक गुजारता है। अतः वर्तमान समय में यदि शिक्षक स्वयं को सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम रूप में प्रदर्शित करना चाहता है तो स्वयं के सशक्तिकरण के लिए उसे अपने सतत् व्यावसायिक विकास के साथ–साथ संचार एवं संप्रेषण तकनीक का पूर्ण ज्ञान होना तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुरूप शिक्षा का उचित संतुलन एवं सम्मिश्रण करना होगा तभी वह अपने शिक्षार्थियों के साथ न्याय कर सकेगा।

संदर्भ

1. भट्टाचार्य डॉ. जे.सी. (2008), ''अध्यापक शिक्षा'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–7
2. शिक्षक–शिक्षा की भारतीय पत्रिका अन्वेषिका, वाल्यूम 6, नं0 2, दिसंबर 2009
3. वालिया डॉ0 जे.एस. (2011), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'' अहम् पाल पब्लिशर्ज, पंजाब
4. भारतीय आधुनिक शिक्षा (अप्रैल 2011) त्रैमासिक जरनल, ISSN 0972-5636 वर्ष 31 अंक 4
5. भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक जरनल) वर्ष 32 अंक 1 जुलाई 2011
6. ''अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता का अभिवर्द्धन'' नैशनल सैमीनार, फरवरी 2013
7. शिक्षामित्र (त्रैमासिक जरनल) 5 (4) जून 2013त्र
8. प्राथमिक शिक्षक, ''शैक्षिक संवाद की पत्रिका ISSN 970-9312 वर्ष 37 अंक, जनवरी 2013